शब्द–ब्रह्म
प्रवेशांक **ISSN 2320 – 0871**
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 नवंबर 2012

# शमशेर के काव्य में 'शब्द विचलन'

अरविन्द कुमार यादव
द्वारा श्री रामशरण यादव, भारत कला भवन, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय,वाराणसी

## परिचय

*'विचलन' काव्य भाषा का ऐसा तत्व है जो भाषा को सौंदर्य प्रदान करने में अहम् भूमिका का निर्वाह करता है। कवि द्वारा विचलन के माध्यम से भाषा में परिवर्तन करता है जिससे भाषा की चारूता में चार चाँद लग जाते हैं और जीवनोत्सर्गमय भाषा ही पाठक को अभिभूत करके, अपनी ओर आकर्षित करने में समर्थ होती है। यही वज़ह है कि भाषा गंभीर हृदयस्पर्शी एवं मार्मिक बन जाती है। ये भाषा को गढ़ने एवं टटकेपन से लैस करने के लिए विचलन का संबल अधिग्रहण करते हैं। इनकी भाषा शैली की ख़ासियत यह है कि भाषा गंभीर एवं मारक होने की वज़ह से पाठक और श्रोता के हृदय को छू जाती है।*

## विचलन का अर्थ

'विचलन' का आशय है- मानक भाषा के व्याकरणिक रूप को अव्याकरणिक रूप में बदल देना। सर्जक मानक भाषा के शब्द क्रमों में परिवर्तन करके, ध्वनियों, शब्दों तथा वाक्यों का नया रूप प्रयोग करके अर्थ भरकर मानक में प्रसंगानुसार भाषा की व्यवस्था तोड़कर अपनी अनुभूतियों को अभिव्यक्त करता है। यह प्रायः दृष्टिगत होता है कि 'विचलन' भारतीय काव्यशास्त्रीय चिंतकों के लिए सवाल खड़ा कर देता है। काव्य भाषा सामान्य भाषा के विशिष्ट मानदंडों को तोड़कर प्रचलित मानदंड की स्थापना करती है। साथ ही ध्वनि सिद्धांत के प्रतीत्यमनार्थ, वक्रोक्ति सिद्धांत के वक्रोक्ति के लक्ष्यार्थ भाषा से 'विचलन' काव्य भाषा का स्पष्टीकरण रूप देता है। 'विचलन' भाषा के मानक प्रयोग से किया जाने वाला अतिक्रम, उल्लंघन या व्यतिक्रम है। जर्मन के लियो स्पित्जर, चेकोस्लोवाकिया के मुकारोव्स्की, फ्रांस के पी. गोरे तथा अमेरिका के चाम्स्की और एस. आर. लिविन आदि विद्वानों ने इस संकल्पना के विकास में अपना योग दिया। लीच एवं शार्ट जैसे शैलीविदों ने Deviation और Deviance जैसे पदों के बीच सूक्ष्म अंतर को स्पष्ट किया, पर भाषाविज्ञान में ये दोनों ही पद प्रायः पर्याय के बतौर समानार्थक रूप में ही व्यवहृत हो रहे हैं। तोदोरोव कहते हैं- "यह अस्पष्ट है कि हमें क्यों एक सामान्य भाषिक मानक की बात करनी चाहिए, क्योंकि भाषा का वस्तुतः यह मिलन स्थल है, जहाँ सैकड़ों मानक और सही अर्थ में मानकहीन मानक भी परस्पर मिलते हैं।"1 'विचलन' विवेच्य की समस्या को खड़ा करता है। शैलीविद मानक की संकल्पना को स्वीकार करने में संकोच करते हैं। विवेच्य विचलन को मानक की तुलना में दिखाया गया है। मुकारोव्स्की एवं ऐरो ही अन्य भाषाविद इस विचलन के संदर्भ में विस्मय एवं अभिसूचना को महत्त्वपूर्ण रूप में स्वीकार करते हैं, "इस संदर्भ में एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न है कि यह मानक पद्धति है या सहप्रयोग का

कुल योग है, पद्धति के रूप में इससे अतिक्रमण करने पर गुणात्मक विचलन उपस्थित होता है तथा सहप्रयोग के स्तर पर आनुपातिक विचलन।"2

सामान्य भाषा के अपने नियम होते हैं तथा ध्वनि, शब्द, रूप-रचना, वाक्य-प्रयोग तथा अर्थ आदि के विभिन्न स्तरों पर अपनी व्यवस्था होती है। भोलानाथ तिवारी कहते हैं कि "काव्य भाषा को विशिष्ट अनुभव की अभिव्यक्ति करनी पड़ती है और इसे विशिष्ट भाषा बनानी पड़ती है। यह सामान्य भाषा के नियमों और जड़ बंधों को तोड़कर होता है, अनुभव का दबाव काव्य सृजन के लिए काव्य सर्जन को मजबूर करता है और इसी दबाव में सामान्य भाषा के नियम बंधन चरमराकर टूट जाते हैं और काव्य भाषा अपनी नयी रचना के साथ जन्म लेती है, विशिष्ट अनुभूति के अनुरूप उसके अनुकूल।"3 रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव कहते हैं "सामान्य भाषा के सामान्य भाषिक नियमों के अतिक्रमण को ही विचलन कहा जाता है।"4 पाण्डेय शशिभूषण 'शीतांशु' भी इस परिप्रेक्ष्य में अपने मत को प्रस्तुत करते हैं- "विचलन में सामान्य गद्य भाषा के मानक (नार्म) का अतिक्रमण होता है। यह अतिक्रमण व्यावहारिक (अनग्रामोति के लिटि) एवं अस्वीकार्यता जैसी दो दिशाओं में होता है।"5 सत्यदेव चौधरी कहते हैं कि "शैलीविज्ञान के क्षेत्र में 'विपथन' से अभिप्रेत है- भाषा के सामान्य रूप से हटकर भाषा का किंचित भिन्न रूप में प्रयोग।"6 इसी को व्याख्यायित करते हुए वे कहते हैं कि "Deviation : Linguistic Usage Considered to depart from normal expectation of the uses of the language" 7 भोलानाथ तिवारी विचलन के संदर्भ में अपना मत व्यक्त करते हैं कि "सामान्य भाषा के नियम, बंधन, चलन, पथ अथवा पथ को छोड़कर नये का अनुसरण करना, नये पथ पर चलना ही विचलन (Deviation) विपथन आदि कहलाता है।"8 भोलानाथ तिवारी कहते हैं कि 'विचलन के जिन भाषिक तत्वों को उभारकर सामने लाया जा सकता है।' ये निम्नवत् हैं-"9

1. अर्थ के स्तर पर ऐसे समस्त प्रयोग अर्थ विस्तार के उदाहरण होते हैं अर्थात् शब्दों में नई अर्थवत्ता आ जाती है। वे सामान्य अर्थ से अतिरिक्त अर्थ ध्वनित करते हैं।
2. भाषा में सर्वाधिक महत्वपूर्ण संज्ञा है। क्रियाविशेषण उसी के बारे में कहते हैं। क्रिया और विशेषण के अर्थ का निर्धारण किसी भाषा के किसी उन संज्ञा शब्दों से होता है जो उनके साथ सहप्रयुक्त होता है।
3. विचलन का मूलाधार सादृश्य होता है। कवि या लेखक जब नियमों का अतिक्रमण करके जिस नयी स्वतंत्र व्यवस्था का निर्माण करता है। वह मानक भाषा की रचना के परिप्रेक्ष्य में ही करता है।

1.2 विचलन का वर्गीकरण

विचलन के निम्नलिखित स्तरीय रूपों को स्पष्ट किया जा सकता है -

1. ध्वनिस्तरीय विचलन
2. शब्दस्तरीय विचलन
3. रूपस्तरीय विचलन
4. वाक्यस्तरीय विचलन
5. प्रोक्तिस्तरीय विचलन
6. अर्थस्तरीय विचलन
7. लेखिकस्तरीय विचलन

शमशेर के काव्य में 'शब्द विचलन' मुक्तिबोध, अज्ञेय की भाँति शमशेर भाषा में ताजापन, नवीनता, गंभीरता और मारक क्षमता को बनाये रखने के लिए विचलन का सहारा ग्रहण करते हैं जिससे काव्य सौंदर्य में अभिवृद्धि होती है। यही वज़ह है कि इनकी भाषा श्रोताओं, पाठकों और अध्येताओं के मानस पटल पर अपनी अमिट छाप छोड़ती है। उसी का प्रतिफल 'शब्द विचलन' है। इनकी कविता में शब्द विचलन निदृष्टि हैं।

शब्दस्तरीय विचलन के विषय में शशिभूषण 'शीतांशु' ने कहा है कि "आधार भाषा में मानक रूप में व्यवहृत होने वाला शब्द जब विरूपित, विकृत होकर प्रयुक्त होता है तो वहाँ शब्दस्तरीय विचलन उपस्थित होता है।"10

संज्ञा विचलन

परंपरागत पद्धतियों को तोड़कर जहाँ संज्ञा शब्दों को प्रयुक्त किया जाता है वहाँ संज्ञा विचलन होता है। संज्ञा शब्द किसी न किसी कारक में प्रयुक्त होता है। शमशेर के यहाँ इस तरह के विचलन मिलते है। इनकी कविता 'पागल का गीत' को देखा जा सकता है-

"पाँवों में उत्साह के पर औ'
अक्षुण्ण गति के तीर
बाँधे।"11

यहाँ कवि ने 'पाँवों' में उत्साह को बताया है। लेकिन पाँव में तो उत्साह नहीं होता है। उत्साह तो मनुष्यों के हृदय में होता है। ऐसा प्रयोग करने के कारण संज्ञा विचलन है। संज्ञा करके कवि ने कविता की मारक क्षमता को बढ़ा दिया है। 'मौन राग ही' कविता से एक बानगी देखी जा सकती है-

"प्रायः शांत सरित के उर पर
नीली लहरें शांत हवा की
शनैः-शनैः मेरी तरूणी को
घेर रही हैं मौन दिशा में-"12

उदाहरण में कवि ने कहा है कि तरूणी को नदी के शांत हृदय में उठने वाली नीली लहरें एवं शांत हवा और अभिव्यक्ति न होने वाली मौन दिशा घेर रही हैं। यहाँ 'सरित के उर पर', 'मेरी तरूणी को' में संज्ञा विचलन है क्योंकि सरित के उर नहीं होते, उर तो मानव (पुरूष-स्त्री) के होते हैं, तो किस प्रकार नीली लहरें एवं शांत हवा उसे घेर रही हैं। यही स्थिति 'मेरी तरूणी' के साथ है। क्या युवती की जवानी को दिशाएं घेर सकती हैं ? 'तरूणी को घेर रही है' का यह अर्थ हो सकता है कि युवती अब जवान हो रही है और बचपन या अल्हड़ता समाप्त हो रही है, जवानी अपनी मादकता के साथ-साथ हावी हो रही है। ऐसा प्रयोग कवि के न करने से कविता का सौंदर्य क्षीण हो सकता था।

सर्वनाम विचलन

जहाँ सर्जक सर्वनामों का प्रयोग प्रचलित तरीके से हटकर अपूर्व चमत्कार उत्पन्न करने के लिए करते हैं वहाँ सर्वनाम विचलन होता है। शमशेर की कविताओं में ऐसे विचलन मिलते हैं। इनकी कविता 'शरबत-सी आँखों की बानी' देखी जा सकती है-

"अपने स्थिर पलकों में भींच रही है
मेरी काली ज्योतिः
मुझको अपने अन्दर लिखने।
बानी।"13

यहाँ सर्वनामों में विचलन है। 'अपने स्थिर पलकों में भींच रही है, मेरी काली ज्योति' के स्थान पर

'मेरी स्थिर पलकों में भींच रही है अपने काली ज्योति' जबकि 'अपने के जगह 'मेरी', 'मेरी' की जगह 'अपने' का प्रयोग हुआ है। 'अम्न का राग' कविता से एक और नमूना देखा जा सकता है-

"उसकी ईटें धड़कते हुए सुर्ख दिल हैं
यह सच्चाइयाँ बहुत गहरी नीवों में जाग रही हैं।
वह इतिहास की अनुभूतियाँ हैं।"14

इस उदाहरण में 'यह सच्चाइयाँ बहुत गहरी नीवों में जाग रही हैं, वह इतिहास की अनुभूतियाँ हैं, जबकि 'यह' के स्थान पर 'वह' और 'वह' के स्थान पर 'यह' का प्रयोग हुआ है। 'सच्चाइयाँ' के पहले 'वह' प्रयोग होने से इतिहास के गहन नीवों की जानकारी का पता चलता है जबकि 'इतिहास' के पहले 'यह' प्रयोग होने से वर्तमान समय की इतिहास अनुभूतियों या सच्चाइयों का पता होता है। इस 'यह' के जगह 'वह' और 'वह' के जगह 'यह' का प्रयोग होने से कविता की मार्मिकता में अभिवृद्धि होती है।

क्रिया विचलन

जहाँ क्रियाओं का प्रयोग प्रचलित ढंग से हटकर किया जाता है वहाँ क्रिया विचलन होता है। इसके द्वारा निर्जीव, अमूर्त, अचेतन, एवं निराकार पदार्थों को सजीव, मूर्त, चेतन, एवं साकार प्राणियों की तरह कार्य करते हुए दिखलाया जाता है और एक विलक्षण चमत्कार की सृष्टि की जाती है। शमशेर की कविताओं में क्रिया विचलन मिलता है। इनकी 'एक नीला दरिया बरस रहा' कविता क्रिया विचलन का उदाहरण है-

"एक नीला दरिया बरस रहा है"15

यहाँ 'एक नीला दरिया बरस रहा है' में बरस शब्द में क्रिया विचलन है। बरसने का कार्य बादल करता है न कि दरिया। दरिया से पानी गिरता है। कवि ने किया विचलन का प्रयोग करके कविता को अत्यधिक मारक और प्रभावी बना दिया है। 'घनीभूत पीड़ा' कविता से एक और बानगी देखी जा सकती है-

"हे अगोरती विभा
जोहती विभावरी !
हे उमर उमामयी
भावलीन बावरी !"16

प्रस्तुत उदाहरण में 'हे अगोरती विभा, जोहती विभावरी' में क्रिया विचलन है। 'अगोरती' और 'जोहती' का काम विभा और विभावरी नहीं करती है। इस कार्य को स्त्री (मानव) ही करती है। इस विभा (क्रांति) और विभावरी (रात) को कवि ने स्त्री के रूप में प्रयोग करके कविता को हृदयस्पर्शी एवं प्रभावशाली बनाया है।

विशेषण विचलन

सर्जक साहित्य की सर्जना करते समय पारंपरिक नियमों या पद्धतियों को खंडित करके जब विशेषणों को प्रयुक्त करता है तो विशेषण विचलन होता है। शमशेर की कविताओं में ऐसे विचलन मिलते हैं। इनकी 'एक नीला दरिया बरस रहा' कविता से उदाहरण रेखांकित है-

"और बहुत चौड़ी हवाएँ हैं"17

यहाँ 'हवा' की विशेषता चौड़ी से बताई गयी है। 'हवा' चौड़ी और पतली नहीं होती है। इसी कारण विचलन है। चौड़ी और पतली तो शरीर या अन्य वस्तुएँ होती हैं। 'रोशनी की लहर' कविता से उदारणार्थ कुछ पंक्तियाँ रेखांकित हैं-

"दूर तक जिनमें खड़े हैं स्पष्ट
मौन चक्राकार ज़ीने
व्योम तक झिलमिल"18

यहाँ कवि ने 'जीने' की विशेषता 'मौन' और

'चक्राकार' से दिया है जो विशेषण विचलन है 'जीना' कभी मौन नहीं होता है। 'मौन' तो 'मानव' होता है। कवि ने 'जीने' का प्रयोग सजीव के रूप में किया है जो कि निर्जीव हैं ऐसा प्रयोग होने के कारण कविता में सौन्दर्यात्मक अभिवृद्धि हुई है।

क्रियाविशेषण विचलन

जब सर्जक सर्जना के दौरान पारम्परिक मानदंडों को खंडित करके क्रिया विशेषणों का प्रयोग करता है तो वहाँ क्रियाविशेषण विचलन होता है। शमशेर की कविताओं में इस तरह के विचलन मिलते हैं। 'अम्न का राग' इनकी कविता इसका प्रमाण है - "हिमालय की बर्फीली चोटी पर चाँदी के उन्मुक्त नाचते।"19

उपर्युक्त उदाहरण की पंक्ति 'हिमालय की बर्फीली चोटी पर चाँदी के उन्मुक्त नाचते' में चाँदी की विशेषता 'उन्मुक्त' विशेषण से बताई गयी है और 'नाचते' किया है। चाँदी नाचने का कार्य नहीं करती क्योंकि वह निर्जीव है। नाचने का कार्य सजीव (जैसे स्त्री) करती है। यही वज़ह है कि यहाँ क्रियाविशेषण विचलन है। हिमालय की विशेषता बर्फीली चोटी से बताई गयी है। 'नाचने' में भी विचलन है। क्योंकि चाँदी स्त्रीलिंग और नाचने की क्रिया पुल्लिंग है। ऐसा प्रयोग करके कवि ने काव्य सौंदर्य में वृद्धि की है। 'सत्ताइस मई, सन् 64: तीसरी पहर' कविता से एक और उदाहरण द्रष्टव्य है-

"आयु की धारा निरन्तर बह रहा है
अगम सागर में किसी विश्वास के
वह समाहित हो रहा है।"20

यहाँ 'आयु' की धारा निरन्तर बह रही है' पंक्ति में क्रिया विशेषण विचलन है। 'धारा' की विशेषता निरन्तर से बताई गयी है और 'बह रहा है' क्रिया है। कवि ने इस कविता में 'आयु का धारा' का प्रयोग किया है इसमें विचलन है 'आयु' और 'धारा' स्त्रीवाची शब्द है लेकिन इसमें संबंध कारक चिह्न का पुल्लिंगवाची प्रयोग हुआ हैं। इसकी जगह पर 'की' कारक चिह्न का प्रयोग होगा 'आयु की धारा'। 'धारा' स्त्रीवाची शब्द तो उसके पुल्लिंगवाची क्रिया का प्रयोग 'बह रहा है' हुआ है। इसकी जगह 'बह रही है' स्त्रीवाची क्रिया का प्रयोग होना चाहिए। 'आयु का धारा निरन्तर बह रहा है' के स्थान 'आयु की धारा निरन्तर बह रही है' होना चाहिए। शमषेर की यही ख़ासियत है कि ऐसा प्रयोग करके कविता के कलात्मक सौन्दर्य में अभिवृद्धि करते हैं जिससे कविता का भाषिक पक्ष उभरकर सामने आता है।

मानक विचलन

भाषा के मानक शब्दों में विचलन मानक विचलन कहलाता है। साहित्यकार को जब कभी ऐसा अनुभव होने लगता है कि इन मानक शब्दों से भावाभिव्यक्ति की संप्रेषणीयता कम हो जायेगी तो वह मानक शब्द से विचलित शब्द का प्रयोग करता है। मानक शब्दों या परिनिष्ठित शब्दों को छोड़कर लोक शब्दों का प्रयोग इसका उदाहरण है। आधुनिक साहित्यकारों ने इसका ख़ूब प्रयोग किया है। लोक भाषा के शब्दों में ताजगी होती है। इसीलिए अभिव्यक्ति अधिक सशक्त एवं प्रभावी हो जाती है। शमशेर की कविताओं में मानक विचलन का प्रयोग बहुत ही कम मात्रा में मिलता है। कहना गलत न होगा कि लोक भाषा के शब्दों का आपने सशक्त एवं प्रभावी प्रयोग किया है। कुछ शब्द यहाँ दृष्टव्य हैं -पिपिहरी, अदहन, डाँगर, चैखट, चैपड़, और दिया-बाती आदि। उदाहरण के लिए लोक या देशज 'गीत' उद्धृत है-

"निंदिया सतावे मोहें सँझही से सजनी।
सँझही से सजनी।।1।।
प्रेम-बतकही
तनक हूँ न भावे
सँझही से सजनी।।2।।
निंदिया सतावे मोहें०।
छलिया रैन
कजर ढरकावे
सँझही से सजनी।।3।।
निंदिया सतावे मोहें०।
दुई नैना मोहें
झुलना झुलावें
सँझही से सजनी।।4।।
निंदिया सतावे मोहें०।"21

प्रस्तुत दृष्टांत में 'निंदिया', 'सतावे', 'मोहे', सँझली', 'बतकही', 'तनक', 'भावे', 'छलिया', 'रैन', 'कजर', 'ढरकावे' 'दुई' और 'नैना' आदि शब्द मानक विचलन के संदर्भ में प्रयुक्त हुए हैं। इनके मानक शब्द क्रमशः ये हो सकते हैं-'निद्रा', 'सताना' या 'कष्ट देना', 'मुझे' या 'मैं', 'शाम', 'बात कहना', 'थोड़ा-सा' 'नसुभना', 'धोखा देने वाला', 'निवास स्थल', 'काजल', 'लुढकाना', 'दो' 'नयन' आदि।

मानवीकरण के रूप में विचलन

सर्जक जब अचेतन एवं अमूर्त पदार्थों का प्रयोग चेतन एवं मूर्त के रूप में करता है तो वहाँ मानवीकरण विचलन होता है। शमशेर की कविताओं में ऐसे विचलन यथेष्ट मात्रा में मिलते हैं। 'शिला का ख़ून पीती थी' कविता से उदाहरण द्रष्टव्य है-

"शिला का ख़ून पीती थी
वह जड़
जो कि पत्थर थी स्वयं।"22

इस उदाहरण में 'शिला' को गरीब जनता के रूप में प्रयोग किया गया है जबकि 'जड़' को पूँजीपति के संदर्भ में। पूँजीपति गरीब जनता का शोषण कर रहा है। इस उदाहरण में 'शिला' गरीब जनता और 'जड़' पूँजीपति के रूप में अमूर्त एवं अचेतन से मूर्त एवं चेतन के रूप में प्रयोग किया है। 'ख़ून' शोषण का प्रतीक है। 'जो कि पत्थर थी स्वयं' में 'पत्थर' शब्द 'जड़' (पूँजीपति) के हृदय का द्योतक है। शमशेर की कविताओं में मानवीकरण के रूप में विचलन के अन्य उदाहरण भी मिलते हैं। 'सागर तट' कविता से एक अन्य उदाहरण प्रस्तुत है-

"चाँदनी की उँगलियाँ चंचल
क्रोशिये से बुना रही थीं चपल
फेन-झालर बेल, मानो।"23

यहाँ 'चाँदनी' अमूर्त एवं अचेतन रूप में है जबकि इसका प्रयोग कवि ने मूर्त एवं चेतन रूप में किया है। 'चाँदनी' को कवि ने 'स्त्री' माना है, क्योंकि चाँदनी के पास अंगुलियाँ नहीं होती हैं, अंगुलियाँ तो सजीव (स्त्री) के पास होती हैं, जो चंचल हैं।

विशेषण विपर्यय के रूप में विचलन

सर्जक जहाँ विशेषण का विपर्यय करके अपने कथन को अधिक अर्थगर्भित एवं चमत्कारपूर्ण बनाया करते हैं वहाँ 'विशेषण-विपर्यय' के रूप में विचलन होता है। शमशेर की कविता 'वह सलोना जिस्म' देखी जा सकती है-

"वह सलोना जिस्म।
उसकी अधखुली अँगड़ाइयाँ हैं"24

यहाँ 'उसकी अधखुली अँगड़ाइयाँ हैं' के स्थान पर 'उसकी अँगडाइयाँ अधखुली हैं' होगा। यह विशेषण विपर्यय के रूप में विचलन को प्रतिभाषित करता

है। उसकी सुंदर शरीर अँगडाइयाँ ली हुई आधी खुली हुई है।

नवनिर्मित शब्दों के रूप में विचलन

आधुनिक साहित्य या रचनाओं में ऐसे अनेक नवनिर्मित शब्द मिलते हैं जो या तो संज्ञा से क्रिया के रूप में बदल गये हैं या क्रिया विशेषण को क्रिया रूप में बदलने से बने हैं या संज्ञा से विशेषण बनाने के कारण निर्मित हुए हैं अथवा विशेषण से संज्ञा, सर्वनाम से संज्ञा, क्रिया से संज्ञा और विशेषण से विशेषण आदि बनाने के कारण परिवर्तित हुए हैं। ऐसे भी नवनिर्मित शब्द इस विचलन के अंतर्गत आते हैं। शमशेर के यहाँ ऐसा विचलन मिलता है। इस संदर्भ में 'सन्ध्या' कविता को देखा जा सकता है-

"सन्ध्या दीर्घात्मीया
उच्छ्वा सांगी प्रीया"25

इस उदाहरण में 'दीर्घात्मीया' शब्द को कवि द्वारा नवनिर्मित किया गया है। यह विशेषण और विशषेण से मिलकर बना है। दीर्घ और आत्मीया दोनों विशेषण है। 'ओ' मेरे घर' कविता से एक और नमूना देखा जा सकता है-

"प्रेम ही मुझे दिया क्रूरतम कटुतम
और अद्भुत शक्तिशाली मकानीकी प्रतिमाएँ।"26

इस उदाहरण में 'क्रूरतम' और 'कटुतम' विशेषण और संज्ञा से नवनिर्मित शब्द हैं। जबकि 'मकानीकी' कवि ने कविता की आबद्ध संगीत को बनाये रखने के लिए विचलन किया है जिस कारण से कविता मारक और हृदयस्पर्षी बनी है। उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि विचलन नियम, बंधन को छोड़कर नये मार्ग का अनुसरण करता है। विचलन का अर्थ एवं वर्गीकरण के साथ शमशेर की कविताओं में विचलन का सोद्देश्य प्रयोग मिलता है। इनकी कविताओं शब्दस्तरीय विचलन में संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, क्रियाविशेषण, मानक, मानवीकरण, विशेषण विपर्यय एवं नवनिर्मित शब्द इत्यादि हैं। विचलन द्वारा कवि ने भावाभिव्यक्ति में नवीनता लाने का सफल प्रयास किया है।

संदर्भ:

1. तादोरव, उद्धृत, 'शीतांशु' पाडेण्य, शशिभूषण: शैली और शैली-विश्लेषण, पृ. 165
2. मुकारोव्स्की, उद्धृत, वही, पृ. 166
3. तिवारी, भोलानाथ: शैलीविज्ञान, पृ. 48
4. श्रीवास्तव, रवीन्द्रनाथ: संरचनात्मक शैलीविज्ञान, पृ. 43
5. शीतांशु", पाडेण्य, शशिभूषण: प्रतिमान और विश्लेषण, पृ. 60
6. चौधरी, सत्यदेव: भारतीय शैली विज्ञान, पृ. 274
7. वही, पृ. 275
8. तिवारी, भोलानाथ: शैलीविज्ञान, पृ. 40
9. शर्मा, कृष्ण कुमार: शैलीविज्ञान की रूपरेखा, पृ. 33
10. शीतांशु", पाण्डेय, शशिभूषण: शैली और शैली-विश्लेषण, पृ. 195
11. सिंह, शमशेर बहादुर: बात बोलेगी, पृ. 88
12. सिंह, शमशेर बहादुर: उदिता, पृ. 47
13. वही, पृ. 37.
14. सिंह, शमशेर बहादुर: बात बोलेगी, पृ. 80
15. सिंह, शमशेर बहादुर: चुका भी नहीं हूँ मैं, पृ. 9
16. सिंह, शमशेर बहादुर: कुछ कविताएँ, पृ. 50
17. सिंह, शमशेर बहादुर: चुका भी नहीं हूँ मैं, वही,पृ. 9
18. अरगड़े, रंजना (सं.): कहीं बहुत दूर से सुन रहा हूँ, पृ. 16
19. सिंह, शमशेर बहादुर: बात बोलेगी, पृ. 77
20. वही, पृ. 95
21. सिंह, शमशेर बहादुर: कुछ और कविताएँ, पृ. 81
22. वही, पृ. 85
23. सिंह, शमशेर बहादुर: कुछ कविताएँ, पृ. 29
24. वही, पृ. 56
25. सिंह, शमशेर बहादुर: इतने पास अपने, पृ. 13
26. वही, पृ. 19